B.A. III
Paper VIII भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन
Unit-III

प्रश्न – भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादी चरण पर संक्षिप्त नोट लिखें। या उग्रवाद के उदय के कारण उनके उद्देश्य तथा कार्य प्रणाली तथा आंदोलन की प्रगति पर प्रकाश डालें।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दूसरे चरण की शुरुआत अग्रवादी राजनीति के उदय के साथ होती है। 19वीं शताब्दी के अंतिम भाग में तथा 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जिसमें उदारवादी नेताओं के कार्यों के प्रति भारतीय नवयुवकों में अंग्रेजों के न्यायप्रियता में उनका विश्वास उठ गया और वे वैधानिक साधनों तथा कांग्रेस की भिक्षावृत्ति की नीति से ऊब गए। अतः उन्होंने उग्र साधन अपनाए जाने का समर्थन किया। और क्रमिक सुधार के स्थान पर पूर्ण स्वराज्य की मांग की तथा स्वराज को अपना जन्मसिद्ध अधिकार घोषित किया। यह आंदोलन केवल मध्यम वर्ग तक एवं शिक्षित वर्ग तक सीमित नहीं रहा बल्कि यह जन-आंदोलन का रूप धारण कर लिया। 1906 से 1919 की इस अवधि को उग्रवादी आंदोलन का युग कहा जाता है।

उग्रवादियों का उद्देश्य "स्वराज" की प्राप्ति था। अग्रणी नेता तिलक कहा करते थे, स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा"। अग्रवादियों का अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता की प्राप्ति था। वे उदारवादियों की भांति वे भी स्वशासन ही चाहते थे किन्तु उनसे भिन्न वे भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के अनुसार संस्थाओं की रचना चाहते थे तथा ब्रिटेन से पूर्ण संबंध-विच्छेद भी। वे पूरी तरह राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के समर्थक थे। उग्रवादियों के लिए स्वराज केवल राजनीतिक ही नहीं बल्कि नैतिक और धार्मिक आवश्यकता भी थी, जिसकी प्राप्ति उनका परम पावन लक्ष्य था।

उग्रवादियों की कार्य प्रणाली :— उग्रवादी संवैधानिक तरीके में विश्वास नहीं करते थे। उदारवादियों के तरीके को वे "राजनीतिक भिक्षावृत्ति" (Political mendicancy) कहते थे। उनका विश्वास था कि राजनीतिक सत्ता प्रार्थना करने अथवा राजनीतिक सुधारों की भीख मांगने से नहीं मिल सकती। तिलक ने कहा था कि हमारा उद्देश्य आत्मनिर्भरता है, भिक्षावृत्ति नहीं"। इसी प्रकार बिपिन चन्द्र पाल का कहना था,

Scanned with CamScanner

"अगर सरकार स्वतः स्वराज्य का दान देती है तो मैं धन्यवाद दूंगा। लेकिन मैं उसे स्वीकार नहीं करूंगा जबतक कि मैं उसे स्वयं हासिल न कर पाऊं।"

उग्रवादियों का विश्वास था कि प्रार्थना पत्र लिखने, भाषण देने और प्रस्ताव पास करने से स्वराज्य की प्राप्ति नहीं हो सकती इसके लिए जनता को जागरित करना और राजनीतिक आंदोलन चलाकर सरकार पर अधिक से अधिक दबाव देना होगा तथा देश वासियों को मातृभूमि के लिए और त्याग करना होगा।

उग्रवादियों का विश्वास सक्रिय विरोध (Active resistance) अथवा सत्याग्रह में था। लाला लाजपत राय ने सक्रिय विरोध के दो लक्षण बताए थे। प्रथम, भारतीयों के मन में घर कर गई ब्रिटिश शासकों की सर्वशक्तिमत्ता और परोपकारिता की भावना को दूर करना, द्वितीय, देश वासियों में स्वतंत्रता के लिए भावपूर्ण प्रेम और त्याग एवं कष्ट सहन के लिए तत्पर रहने की भावना को जगाना। उग्रवादियों के सक्रिय कार्यक्रम में बहिष्कार, स्वदेशी तथा राष्ट्रीय शिक्षा सम्मिलित थी। बहिष्कार से तात्पर्य विदेशी वस्तुओं, स्वदेशी सरकार एवं स्वदेशी व्यवस्था की स्थापना से था। "राष्ट्रीय शिक्षा" से तात्पर्य देश वासियों को राष्ट्रीय हित की शिक्षा देना था।

उग्रवादियों की कुछ अन्य विशेषताएं भी थीं जिनका उल्लेख यहां करना आवश्यक है।

(i) उग्रवादी पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से घृणा करते थे और भारतीय सभ्यता और संस्कृति से को श्रेष्ठ मानते थे। धार्मिक जागृति से उन्हें विशेष प्रेरणा मिली थी।

(ii) उग्रवादी स्वराज्य के अतिरिक्त अपनी संस्कृति एवं परंपरा के अनुरूप देश वासियों का चरित्र निर्माण करना चाहते थे।

(iii) उग्रवादियों को ब्रिटिश जाति की सर्वोपरि शक्ति, न्याय प्रियता एवं परोपकारिता में तनिक भी विश्वास नहीं था।

(iv) उग्रवादी ईश्वर, देश एवं आत्मनिर्भरता में विश्वास करते थे।

(v) उग्रवादियों को विश्वास था कि भारत और ब्रिटेन के आर्थिक हितों में विरोध है। अतः वे जल्द से जल्द ब्रिटेन से आर्थिक एवं व्यापारिक संबंध-विच्छेद के पक्ष में थे।

Scanned with CamScanner

(vi) भारतीयों में नई राष्ट्रीयता को जगाना और त्याग और सहन के मार्ग को अपनाना उग्रवादियों के प्रमुख साधन थे।

उग्रवादी आंदोलन की प्रगति :— 1907 में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में उग्रवादी दल का जन्म हुआ। दमन की प्रतिक्रियावादी नीति, शासन सुधार के प्रति अंग्रेजों की उदासीनता देशविदेश की घटनाओं का प्रभाव तथा संवैधानिक तरीकों की विफलता के कारण कांग्रेस में कुछ ऐसे लोगों का उदय हुआ जो उग्र मार्गों को अपनाने के पक्ष में थे। धीरे-धीरे कांग्रेस दो गुटों में बट गया। जिसे नरमदल एवं गरम दल के नाम से जाना जाने लगा। नरम दल के प्रमुख नेता गोपालकृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता और सुरेन्द्र नाथ बनर्जी थे। गरम-दल के नेता बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चन्द्र पाल और लाला लाजपत राय थे जो लाल-बाल-पाल के नाम से विख्यात थे। पहली बार 1905 के बनारस अधिवेशन में कांग्रेस में विघटन हुआ और कांग्रेस की राजनीतिक भिक्षावृत्ति की नीति पर गहरा प्रहार किया गया और भविष्य में और भी प्रबलतम होता गया।

कलकत्ता अधिवेशन — 1906 में दादाभाई नौरोजी को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया गरमदल तिलक को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। लेकिन दादा भाई नौरोजी ने अपनी चातुर्य से कांग्रेस में फूट नहीं होने दिया। उन्होंने अध्यक्ष पद से कांग्रेस का लक्ष्य स्वराज्य घोषित किया। और साथ ही स्वदेशी आंदोलन, विदेशी माल का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा के समर्थन में प्रस्ताव पारित किए गये। इससे उग्रवादी नेताओं में संतोष हुआ।

सूरत फूट :— 1907 में कांग्रेस का सूरत में अधिवेशन हुआ। इतिहास में यह एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अध्यक्ष पद के लिए गहरा मतभेद हुआ। उग्रवादी नेता तिलक को इस अधिवेशन का सभापति बनाना चाहते थे, परंतु उदारवादियों ने बहुमत से डॉ० रास बिहारी बोस को सभापति निर्वाचित किया। फलतः अध्यक्ष के भाषण के पहले ही हो हल्ला तथा शोरगुल के कारण अधिवेशन को स्थगित करना पड़ा।

Scanned with CamScanner

सूरत अधिवेशन में उग्रवादी बहुमत में थे। इसके सम्बन्ध में अलग बैठक कर के कॉंग्रेस के उद्देश्यों को स्पष्ट किया। एनी-बेसेंट ने सूरत की घटना को कॉंग्रेस के इतिहास में सर्वाधिक शोकपूर्ण घटना कहा है।

उग्रवादी नेता कॉंग्रेस के उदेश्य से सहमत नहीं थे। अतः वे कॉंग्रेस से अलग हो गये। उन्होंने ने एक उग्रवादी दल का निर्माण किया। कई वर्षों तक अलग दल के रूप में काम करते रहे। 1916 ई० में समझौता हुआ और दोनों दल सम्मिलित ढंग से काम करने लगे।

तिलक द्वारा नेतृत्व :— तिलक एक देशभक्त एवं महान स्वतंत्रता-प्रेमी थे। देश वासियों की हीन दशा को देख कर उन्हें अत्यंत दुख हुआ तथा उसे किसी उपाय से दूर करने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा की। इसके लिए उन्हें तीन बार जेल जाना पड़ा। इनके कार्यों का जनता ने आदर किया और शीघ्र ही वे देश में सर्वप्रिय नेता बन गये। तिलक ने मराठा तथा केसरी नामक दो साप्ताहिक पत्रों का प्रकाशन आरंभ किया। इन पत्रों में कोल्हापुर राज्य के संबंध में लेख प्रकाशित हुआ, अंग्रेजों ने उन्हें जेल में डाल दिया जिससे उनकी लोकप्रियता में और वृद्धि हो गयी।

गणपति उत्सव :— तिलक ने यह महसूस किया कि भारतीयों में आत्मविश्वास एवं आत्मनिर्भरता की भावना की कमी आ गई है। इसके लिए नवयुवकों की भावना को जगाने का कार्य किया। इसके लिए उन्होंने ने एक विशेष आयोजन का प्रचलन किया जिसे सभी गणपति उत्सव कहा जाता है। इस उत्सव का उद्देश्य भारतीयों में अनुशासित एवं संगठित रूप से कार्य करने की भावना को जागृत करना। यह उत्सव नवयुवकों को जागृत करने एवं संगठित करने में सफल रहा।

शिवाजी उत्सव :— गणपति उत्सव की भाँति शिवाजी उत्सव का आयोजन किया गया। यह उत्सव पूर्णतया राजनीतिक था। तिलक ने महान योद्धा शिवाजी को आदर्श महाराष्ट्रवासियों के सामने रखा। शिवाजी उत्सव भी काफी सफल रहा। नवयुवकों में देशप्रेम, बलिदान तथा साहस

Scanned with CamScanner

जैसे गुणों का उदय हुआ।

दुर्भिक्ष और प्लेग का महाराष्ट्र में बहुत तेजी से प्रकोप हुआ, अंग्रेजी सरकार प्रकोप का निवारण करने में असफल रही, जनता में सरकार के प्रति असंतोष फैल गया। तिलक ने इस परिस्थिति से लाभ उठाया। उन्होंने जन सहायता के लिए एक कोष बनाया। किसानों को लगान देने से मना कर दिया। इसी समय प्लेग कमिश्नर रैंड और लेफ्टिनेंट एयर्स्ट की हत्या कर दी गई। अंग्रेजों को लगा की हिंसात्मक वातावरण उत्पन्न करने के तिलक का मुख्य हाथ है। 27 जुलाई 1897 को तिलक को बंदी बना लिया गया। उनको 18 महिने का कठोर कारावास की सजा हुई।

1908 में तिलक को पुनः कारावास का दंड दिया गया। तिलक के प्रभाव के कारण कांग्रेस भिक्षावृति की नीति के स्थान पर सक्रिय नीति को अपनाने लगी। तिलक को 6 वर्ष का निर्वासन दंड दिया गया। उन्हें मांडले जेल भेज दिया गया। उनकी अनुपस्थिति में राष्ट्रीय आंदोलन नेतृत्व विहीन हो गया।

बंगाल विभाजन :— बंगभंग विभाजन भारत के लिए वरदान साबित हुआ। 19 जुलाई 1905 को बंग-भंग की घोषणा की गई तथा 16 अक्टूबर 1905 को इसे कार्यान्वित कर दिया गया। बंगाल विभाजन का प्रस्ताव आते ही कलकत्ता में महाराजा जितेन्द्र मोहन ठाकुर के अध्यक्षता में एक आम सभा का आयोजन किया गया, जिसमें बंगाल विभाजन के संबंध में कुछ संशोधन तथा परिवर्तन करने की प्रार्थना की गई। लार्ड कर्जन इन प्रस्तावों को मानने से इनकार कर दिया। पुनः 7 अगस्त को एक सभा का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त पूरे बंगाल में जनसभाएँ हुई। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया, राष्ट्रीय शोक दिवस मनाया गया। कांग्रेस ने भी बंगाल विभाजन का जोरदार विरोध किया। "वंदेमातरम्" के गान से सारा राष्ट्र गूंज उठा।

ब्रिटिश सरकार के आंदोलन को कुचलने का भरसक प्रयास किया। "वंदेमातरम" के नारे को अवैध घोषित किया गया। सरकार ने हिन्दु और मुसलमानों में

फूट डालना आरंभ किया।

इस प्रकार बंगाल विभाजन का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर कई महत्वपूर्ण प्रभाव पड़े।

प्रथम, बंगाल - विभाजन के विरुद्ध आंदोलन ने सोई हुई जनता को जगा दिया।

दूसरा, बंग-भंग की घटना ने भारतीय राजनीति में उग्रवादियों की प्रगति को तीव्र गति प्रदान की।

तीसरा, बंग-भंग विरोधी आंदोलन ने उग्रवाद की जड़ को और दृढ़ बना दिया जिससे क्रांतिकारी आंदोलन को जन्म दिया।

चौथा, बंग विच्छेद के फलस्वरूप भारतीय राजनीति में स्वदेशी आंदोलन का समावेश हुआ।

पाँचवाँ, बंग-भंग की अवधि में लार्ड कर्जन "विभाजन करो शासन करो" की नीति अपनाकर हिंदू और मुसलमानों में फूट उत्पन्न की जिसका परिणाम पाकिस्तान की स्थापना था।

बंगाल विभाजन के विरुद्ध कई वर्षों तक आंदोलन चलता रहा, अंत में सरकार ने 1911 ई० में बंगाल-विभाजन को रद्द कर दिया।

Scanned with CamScanner